P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-1* ISSUE-12* March- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

रामचरितमानस में नारी विषयक अवधारणाएं : एक विमर्श

वर्षा रानी
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
भदोही

सारांश

रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों में नारी विषयक जितने भी संदर्भ आये हैं, वे तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति तथा नारी विषयक मान्यताओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। बालकाण्ड में राम नाम की महिमा के प्रसंग में अहिल्या और ताड़का के उद्धार का वर्णन है। अर्थात राम (उत्तम पुरुष) द्वारा (अधम) स्त्रियों का उद्धार।

'राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी।।
रिषि हित राम सुकेतु सुता की। सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी।।
सबरी गीध सुसेवकन्हि, सुगति दीन्ह रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल, वेद बिदित गुन गाथ।। 24।।

यह छंद स्त्रियों की तत्कालीन स्थिति को दर्शाता है। दूसरा ध्यातव्य प्रसंग बालकाण्ड में ही सती के राम के प्रति संदेह निवारण का है। इस प्रसंग में सती के माध्यम से नारी स्वभाव पर टिप्पणी की गई है। यहां कवि का मानना है कि संदेह नारी का स्वभाव है भले ही वह देवी सती सदृश नारी ही क्यों न हो।

''सती कपटु जानेउ सुर स्वामी। सँबदरसी सब अंतरजामी।।
सुमिरत जाही मिटइ अग्याना। सोइ सर्बग्य राम भगवाना।।
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाउ प्रभाउ।।
निज माया बलु हृदय बखानी। बोले बिहँसि राम मृदु बानी।।
राम बचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोचु।
सती सभीत महेस पहिं, चली हृदय बड़ सोचु।।'' 53।।

यह प्रसंग इस मान्यता को भी पुष्ट करता है कि पति की बात न मानने वाली नारी की क्या गति होती है। सती द्वारा पति पर विश्वास न कर स्वयं राम के ईश्वरत्व का परीक्षण करने के परिणाम स्वरूप आगे चलकर उन्हें देह त्याग करना पड़ा। देवी होते हुए भी नारी स्वभाव के कारण अज्ञानतावश छल किया। सती द्वारा सीता का वेश धारण करने के कारण शिव उनका परित्याग करते हैं क्योंकि पूज्य सीता माता का वेष धारण कर चुकी सती को पत्नी रूप में स्वीकार करना भक्ति की अवहेलना होती।

'सती कीन्ह सीता कर वेषा। सिव उर भयेउ विषाद विसेषा।
जौं अब करउँ सती सन प्रीती। मिटै भगति पथ होइ अनीति।। 56।।

यहां अराध्य की अखण्डित निष्ठा के लिए पत्नी का परित्याग एक सामान्य सी घटना है। सती स्वयं भी अपनी अज्ञानता को नारी स्वभाव स्वीकार करती हैं।–

'सती हृदय अनुमान किय सबु जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपट मैं संभु सन, नारी सहज जड़ अग्य।।'

मुख्य शब्द : रामचरितमानस का पुनर्पाठ, नारी विमर्श, रामचरितमानस की स्त्री पात्र, कैकेयी, अहिल्या, शबरी, पार्वती, विभिन्न वर्ग की महिलाओं में स्वभावतः अज्ञानता का प्रश्न।

प्रस्तावना

नारी के सामान्य स्वभाव के विमर्श के अनेक प्रसंग अयोध्याकाण्ड में कैकेयी द्वारा राम वनगमन की मांग के प्रसंग में, अरण्यकाण्ड में शबरी–राम संवाद अथवा नारद–राम संवाद, लंकाकाण्ड के राम–समुद्र संवाद आदि में भी मिलता है। कुछ प्रसंगों में स्वयं श्रीराम के मुख से तुलसीदास जी ने तत्कालीन नारी विषयक अवधारणाएं परिलक्षित की हैं। यथा–

''काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद माया रूपी नारि।।''43।।
सुनि मुनि कह पुरान श्रुति संता। मोह बिपिन कहुं नारि बसंता।।
जप तप नेम जलाश्रय झारी। होइ ग्रीषम सोषइसब नारी।।
काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरषप्रद बरषा एका।।

दुर्बासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहं सरद सदा सुखदाई।।
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा।।
पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई।।
पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड़ रजनी अंधिआरी।।
बुधि बल सील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना।।
अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि।।44।।
अरण्यकाण्ड।

अर्थात काम, क्रोध, लोभ और मद आदि मोह या अज्ञान की प्रबल सेना हैं। इनमें माया रूपिणी स्त्री तो अत्यंत दारुण दुख देने वाली है।

उपरोक्त प्रसंग अरण्यकाण्ड के उत्तरभाग में राम सीता के विरह का अनुभव करते हुए वन में भटक रहे हैं। राम को विरह युक्त देखकर नारद जी के मन में विचार आया कि यह विरह मेरे ही श्राप का परिणाम है। उक्त प्रसंग के संदर्भ में नारद राम से पूछते हैं कि क्या कारण है कि आपने मुझे विवाह नहीं करने दिया। इस प्रश्न के उत्तर में राम के मुख से भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की प्रचलित तत्कालीन अवधारणाओं को तुलसी दास जी ने प्रस्तुत किया है, जिसके अन्तर्गतनारी को मोह माया और अज्ञान का प्रतीक कहा गया है।

रामचरित मानस में राम द्वारा ताड़का, अहिल्या, शबरी आदि नारी पात्रों के उद्धार के वर्णन के क्रम में भी तीन अलग अलग वर्गों या संस्कृतियों की स्त्रियों की सामान्य धरातल पर समान स्थिति दिखायी गई है। ताड़का राक्षस संस्कृति की होते हुए भी दीन है–

''चले जात मुनि दीन्ह देखाई। सुनि ताड़का क्रोध कर धाई।।
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।'' 13।। बालकाण्ड दोहा 209 से पुर्व।

अहिल्या उद्धार के प्रसंग में ऋषि पत्नी अर्थात सभ्यतम संस्कृति की नारी की अवस्थिति भी अत्यंत दयनीय है। अहिल्या राम के द्वारा स्पर्श मात्र से शाप मुक्त होकर शिला से पुनः स्त्री का रूप पाती हैं। –

''गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति कृपा करहुंरघुबीर।।210।।
बालकाण्ड।

यहां व्यंग्यार्थ (भक्तिकालीन रहस्यवाद के अन्तर्गत) लेने पर उपल देह का अर्थ पाषाण न होकर जड़ या अज्ञानी तथा शाप मुक्त होकर चेतना प्राप्त करना ज्ञान प्राप्त करना प्रतीत होता है । अतः ज्ञान प्राप्त कर अहिल्या जड़ता के बंधन से मुक्त होती हैं। और ज्ञान प्राप्त करते ही वे भक्तों की श्रेणी में आ जाती हैं।राम की वंदना करते हुए स्वीकार करती हैं कि मैं समाज में अपवित्र मानी जाने वाली नारी हूं और आप संसार के सर्वाधिक पावन पुरुष हैं।–

''धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुं चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यान गम्य जय रघुराई।।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई।।''बालकाण्ड।।

अयोध्याकाण्ड में भी कैकेयी द्वारा दशरथ के साथ किये गये प्रपंच में भी नारी स्वभाव को ही दोषी दर्शाया गया है ''जदपि सहज जड़ नारि अयानी.....'' अर्थात नारी सहज ही मूर्ख और अज्ञानी है और राजा दशरथ नीति निपुण होते हुए भी नारी मोह में पड़कर उसका विश्वास कर धोखा खा गये ''जद्यपि नीति निपुण नरनाहू नारि चरित जलनिधि अवगाहू....''

आज की शब्दावली में जिसे त्रियाचरित्र कहते हैं उसी वक्र कथन शैली में कैकेयी के इस अनीतिपूर्ण कार्य के लिए नारी स्वभाव के संबंध में तत्कालीन समाज में प्रचलित तथा पूर्व के कवियों द्वारा निर्मित इस सामान्य धारणा को आधार बनाकर कवि ने लिखा है– ''सत्य कहऊँ कवि नारि सुभाऊ सब विधि अगहु अगाध दुराऊ।।'' अथवा ''निज प्रतिबिम्ब बरकु गहि जाई जानि न जाई नारि गति भाई.....।।'' या फिर ''काह न पावक जारि सकु का न समुद्र समाई। कान करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाई।।''

भरत जैसे परम संवेदनशील धर्म रक्षक पुरुष के मुख से भी क्रोधावेश में कहे गये नारी विषयक सामान्य कथनों के द्वारा कैकेयी के प्रति रोष प्रकट करना भी पितृसत्तात्मक समाज में नारी विषयक अवधारणाओं को ही बिम्बित करता है।–

''विधिहुं न नारि हृदय गति जानी सकल कपट अघ अवगुण खानी...'' आदि।

शबरी प्रसंग में भी अपनी (स्त्रियों की) दयनीय दशा का वर्णन करते हुए कहती है–

''अधम ते अधम अधम अति नारी, तिन्ह में मैं मति मंद अघारी।।''

ऐसे प्रसंगानुगत नारी विषयक अवधारणाओं में तत्कालीन समाज तथा साहित्य में व्यक्त रूढ़िवादी मान्यताओं के ही दर्शन होते हैं। ये विचार कवि के सायास न होकर संस्कारगत रूप में अनायास ही व्यक्त होते प्रतीत होते हैं। रामचरितमानस को तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश और प्रबंध काव्य की काव्यशास्त्रीय रूढ़ियों के परिप्रेक्ष्य में देखने पर इसमें वर्णित नारी विषयक सामान्य अवधारणाएं मध्यकालीन नारी समाज की स्थिति का यथार्थ प्रस्तुत करती प्रतीत होती हैं।

मध्यकालीन समाज में नारी अज्ञान, मोह, माया आदि अवगुणों की खान के रूप में न केवल पुरुष अपितु स्त्रियों के मन मस्तिस्क में भी प्रतिष्ठित थी। यह मानसिक संस्कार अब तक के भारतीय समाज में भी व्याप्त है।और इसी अवधारणा से मुक्ति के प्रयास में आधुनिक काल के समाजसुधारकों ने स्त्री शिक्षा को महत्व देने के प्रयास किये। मध्यकाल से रीतिकाल तक के साहित्यिक और ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार स्त्री की सामाजिक

स्थिति सम्पत्ति या उपभोग की वस्तु के रूप में दिखायी देती है। अतः जिस प्रकार धन, राज्य, सम्पदा के प्रति लोभ मनुष्य को अवसान की ओर ले जाता है, उसी प्रकार स्त्री धन के प्रति मोह भी गर्त की ओर ले जाता है। कवि ने अपने आदर्श चरित्र राम के मुख से भीनारी के प्रति लोभ को निषिद्ध और नारी की मोहात्मक संगति को ऋषि, मुनि, वैरागी ज्ञानियों के लिए सर्वथा निषिद्ध कहलवाया है। यह समाज नारी को भोग की वस्तु के रूप में देखता है यही कारण है कि भक्ति और ज्ञान के मार्ग में इसे बड़ी बाधा माना गया। राम द्वारा स्त्री उद्धार के प्रसंगों में भी अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने पर मोक्ष की प्राप्ति दिखायी देती है। सती द्वारा शिव से ज्ञान प्राप्ति का प्रयास स्त्री समाज के स्वप्रयत्नों को बिम्बित करता है। सती की मृत्यु में अज्ञान को प्रमुख कारण के रूप में संकेतित किया गया है। अर्थात जब तक अज्ञान या अशिक्षा के अंधकार में डूबा यह नारी समाज ज्ञान या शिक्षा का प्रकाश प्राप्त नहीं कर लेता उसका अस्तित्व सती की तरह ही विलीन होता रहेगा। जो अशिक्षित है वही अधम है। जिसे ज्ञान के क्षेत्र से वंचित रखा जाएगा वह तो अज्ञानी होगा ही। अतः रामचरित मानस को तत्कालीन समय और समाज में नारी की सामाजिक और वैचारिक स्थिति के आधार पर पुनः नये दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मध्यकालीन समाज में नारी के सामाजिक सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर के संबंध में प्रचलित अवधारणाओं का तत्कालीन रचित सुप्रसिद्ध साहित्य ग्रन्थ रामचरितमानस के आधार पर अनुसंधान करना है। साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। इस विचार को दृष्टिगत करते हुए रामचरितमानस सदृश महाकाव्य तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करने वाला महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। महाकवि तुलसीदास ने यद्यपि रामराज्य की संकल्पना कर मानव समाज के आदर्शों की प्रतिष्ठा का प्रयास किया है, तथापि वर्तमान परिदृश्य में उनके अनेक आदर्श समीचीन प्रतीत नहीं होते। इस साहित्यिक ग्रन्थ को धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित कर आलोचकों ने तुलसीदास द्वारा मध्यकालीन समाज के सापेक्ष जिन मूल्यों और आदर्शों को स्थापित किया है, उन्हें शाश्वत मूल्य और आदर्श प्रमाणित किया। कतिपय प्रगतिशील आलोचकों ने पूर्व के आलोचकों जिनमें प्रमुख रूप से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रामचरितमानस संबंधी स्थापनाओं का खण्डन भी किया है। विशेषकर रामचरितमानस में नारी को अज्ञानी, पराश्रित तथा निम्न श्रेणी का उल्लिखित किया गया है। वह नारी चाहे देवी हो, उच्च कुल की हो अथवा निम्न जाति की हो, उसके मानसिक स्तर को तुच्छ माना गया है, तथा उन्हें ज्ञान देने अथवा उद्धार करने की आवश्यकता बताई गई है। ऐसी स्वभावतः अज्ञानी स्त्री का संसर्ग एक उत्तम पुरूष के लिए निषिद्ध माना गया है। नारी के सामान्य स्वभाव का जहां कहीं भी वर्णन है, वह माया, मोह, अज्ञान, विषय–वासना आदि अवगुणों की धारक अथवा प्रतीक मानी गई है। रामचरितमानस में अनेक स्थलों पर इसके उदाहरण मिल जाएंगे। जो इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि जिस समय समाज में इस ग्रंथ की रचना की गई, उस समाज में नारी के विषय में कैसी अवधारणाएं प्रचलित रही होंगी। ध्यातव्य है कि नारी विषयक इन अवधारणाओं को कवि तुलसीदास की व्यक्तिगत अवधारणा मानना भूल होगी। क्योंकि उनके मानसिक संस्कार भी मध्यकालीन समाज के आदर्शों अथवा मूल्यों के अनुरूप ही विकसित हुए होंगे। यहां प्रगतिशील विचारों के मध्यकालीन कवि कबीर का उल्लेख संदर्भित है। कबीर को प्रगतिशील विचारधारा का कवि कहा जाता है किन्तु जहां स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की बात आती है कबीर अन्य सन्त कवियों की भांति उन्हें माया–मोह और अज्ञान का प्रतीक ही बताते हैं। अतः इस शोध पत्र का उद्देश्य मध्यकालीन समाज में सामान्य रूप से नारी स्वभाव के संबंध में प्रचलित अवधारणाओं का अनुसंधान कर वर्तमान समाज में नारी विषयक सामाजिक अवधारणाओं की पृष्ठभूमि को रेखांकित करना है।

निष्कर्ष

आज भी जब स्त्रियां अपनी शारीरिक और बौद्धिक शक्ति को प्रमाणित कर चुकी हैं, तब भी हमारा भारतीय समाज उन्हें पुरूष के सापेक्ष अल्पबुद्धि एवं कमजोर ही मानता है। आज भी घरों में स्त्रियों के द्वारा स्वतंत्र रूप से लिए गये निर्णय का कोई मूल्य नहीं है, उसे हर निर्णय के लिए घर के पुरुष की ओर देखना पड़ता है और उनका निर्णय ही अन्ततः मान्य होता है। यह माना जाता है कि एक योग्य स्त्री को भी अयोग्य पुरुष के निर्णय मानने होंगे। पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी संबंधी अनेक अवधारणाओं को खण्डित और मण्डित करने की आवश्यकता दिखाई देती है। साहित्य के क्षेत्र में ऐसे ग्रन्थों के पुनर्मुल्यांकन की आवश्यकता है, जिन्हें भारतीय समाज का आदर्शात्मक धर्म ग्रन्थ माना गया है। जिनके आधार पर अथवा जिनके उद्धरणों से समाज अपने आदर्श नियत करता है और नियम बनाता है। रामचरितमानस एक ऐसा ही आदर्शात्मक काव्य साहित्य है जिसे भारतीय समाज का श्रेष्ठ धर्मग्रन्थ मानकर उसमें वर्णित आदर्शों और अवधारणाओं को आधुनिक संदर्भों में मूल्यांकित किये बिना ग्रहण करने पर बल दिया जाता है। यह साहित्य पितृसत्तात्मक और वर्णाश्रम व्यवस्था वाले समाज के आदर्शों को बिम्बित करता है अतः इसमें स्त्री समाज एवं निम्न वर्ग के समाज के साथ न्याय नहीं हो सका है। रामचरितमानस में अनेक स्थलों पर वर्णित नारी स्वभाव के वर्णनों का अवलोकन करने के पश्चात् निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मध्यकालीन समाज में प्रचलित नारी विषयक अवधारणाएं हीं यहां बिम्बित हुई हैं तथा इन अवधारणाओं को आधुनिक संदर्भों में विवेचित करने की आवश्यकता है। रामचरितमानस जैसे ग्रंथ में नारी को स्वभावतः अज्ञानी माने जाने के पीछे कौन से कारण हैं तथा क्या यह अवधारणा उचित है आदि प्रश्नों के आलोक में इस विषय पर और भी शोध किये जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पोद्दार हनुमानदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, रामचरितमानस ।*

2. *सिंह, योगेन्द्र प्रताप, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1999, गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस की लोकभारती टीका।*
3. *मिश्र, बलदेव प्रसाद, मानस में रामकथा, सं.–1952।*
4. *गुप्त, माता प्रसाद, तुलसीदास, सं.–1942।*